क्यों हाशिये पर बुनियादी विज्ञान?

जयकुमार

कुछ दिन पहले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के एक सीनियर प्रोफेसर से सामना हुआ। वे इस बात से बड़े व्यथित थे कि आईआईटी में भी उन्हें ऐसे विद्यार्थियों का सामना करना पड़ता है जिन्हें विज्ञान की सामान्य समझ भी नहीं होती। उनका कहना था कि आजकल कुछ माह में ही पता चल जाता है कि कौन-सा विद्यार्थी कितने पानी में हैं और कौन वाकई प्रतिभाशाली हैं। उनके अनुसार अधिकांश विद्यार्थी एक माह में ही एक्पोज़ हो जाते हैं। आखिर एक्पोज़ होंगे भी क्यों नहीं? कोचिंग कक्षाओं में गढ़े गए इन बच्चों के दिमाग में फॉर्मूले ही भरे होंगे, इनोवेशन के विचार नहीं।

सवाल यह है कि इसमें आखिर दोष किसका है? क्यों आईआईटी के विद्यार्थी भी खुद को केवल चार साल के कोर्स तक सीमित कर लेते हैं? क्या दोष बस इन विद्यार्थियों का है? या उनके अभिभावकों का या फिर उन कोचिंग संस्थानों का जहां से ये आईआईटी संस्थानों के दरवाज़ों पर दस्तक देते हैं? दरअसल, इनमें से तीनों का नहीं। दोष अगर है तो उस व्यवस्था का जिसकी वजह से आज विज्ञान हमारी चेतना से दूर होता जा रहा है।

क्या देश के स्कूलों में ऐसी चेतना पैदा करने की कोशिश की गई कि विज्ञान को महज़ एक विषय से भी आगे समझा जाए? इसके लिए निश्चित तौर पर सरकारों को आगे आना था। लेकिन लगता नहीं कि किसी सरकार ने कभी इस बात पर विचार किया होगा कि आखिर 1930 के बाद देश के किसी नागरिक को विज्ञान में नोबेल क्यों नहीं मिल पाया? यह पुरस्कार पाने वाले सीवी रमन की शायद व्यक्तिगत विलक्षणता थी, लेकिन क्या सरकार खुद ऐसे वैज्ञानिक तैयार कर पाई जो बुनियादी विज्ञान पर काम कर सकें? इसका जवाब नहीं में ही मिलता है। यही वजह है कि 82 साल बाद भी हम विज्ञान में एक अदद नोबेल के लिए तरस रहे हैं।

आज विज्ञान का मतलब रह गया है सूचना प्रौद्योगिकी। निस्संदेह सूचना प्रौद्योगिकी यानी आईटी ने हमारे देश को बहुत कुछ दिया है। हज़ारों मध्यमवर्गीय परिवारों के सपनों को साकार करने में इसकी अहम भूमिका रही है, लेकिन आज हमारी चेतना पर आईटी इस कदर हावी हो गई है कि हमने इसे ही सब कुछ मान लिया है। स्टीव जॉब्स के आविष्कारों को हम आंखें फाड़कर देखते हैं, लेकिन सालों बुनियादी विज्ञान पर अपनी ज़िन्दगी खपा देने वाले नोबेल पुरस्कार विजेताओं के नाम हम शाम तक भुला देते हैं। आज दिक्कत यह है कि आईटी का सम्बंध भी विज्ञान से कम, व्यापार से ज़्यादा हो गया है। इसलिए आउटसोर्सिंग पर प्रतिबंध लगाने के अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के संकेत भर से हमारी सरकार के कान खड़े हो जाते हैं।

पिछले तीन दशक में हमारे देश में भी बहुत कुछ बदला है। आज टाइपराइटर गायब हैं। उनके स्थान पर लैपटॉप और आईपैड आ चुके हैं। इसी तरह वॉकमैन के स्थान पर आईपॉड और डॉयलिंग वाले फोन के स्थान पर स्मार्ट आईफोन नज़र आते हैं। लेकिन स्मार्ट फोन और आईपैड कंप्यूटरों की दुनिया के बीच कम से कम भारत में वह बुनियादी विज्ञान परिदृश्य से गायब है, जो इन स्मार्ट फोन और आईपैड के आविष्कार का आधार बना होगा।

फिर आईआईटी पर आते हैं। हमारे देश में हाल के वर्षों में विज्ञान के मायने आईआईटी और उनके जैसे ही तकनीकी संस्थानों की बढ़ती संख्या और इसकी सीटों को लेकर उभरती प्रतिस्पर्धा में ढूंढा जाता है। निस्संदेह ये भारत के सबसे बेहतरीन तकनीकी संस्थान हैं, लेकिन इन्हें लेकर जो दीवानगी है, उसका सम्बंध विज्ञान से कम, कैरियर से ज़्यादा हो गया है। आईआईटी की परीक्षाओं में शामिल बच्चों के दिमाग में क्या विज्ञान के लिए काम करने का कोई जज़्बा होता है? शायद नहीं। आज के बच्चे कैरियर ओरिएंटेड हैं, इसलिए इन बच्चों से ऐसी उम्मीद भी नहीं की जा सकती कि वे किसी इनोवेशन पर अपना दिमाग खपाएंगे।

आज मीडिया में भी विज्ञान सम्बंधी केवल तीन तरह की खबरें छपती हैं। पहली, आईआईटी की परीक्षाओं के सम्बंध में या फिर किसी आईआईटी के विद्यार्थी को मिले पैकेज के बारे में जो रुपए में परिवर्तन के बाद इतना भारी-भरकम नज़र आता है कि मीडिया उसे पहले पेज की खबर बनाने को लालायित हो उठता है। दूसरी, जब भी कोई नया आईपैड या स्मार्ट फोन आता है, तो वह सुर्खियां बन जाता है, जबकि वह मूल आविष्कार का अपग्रेडेशन भर होता है। तीसरी खबर स्टेम सेल के बारे में कोई उम्मीद जगाने वाली होती है। निस्संदेह यह शुद्ध वैज्ञानिक खबर होती है, लेकिन इसे लेकर भी इस तरह से खबरें प्रकाशित की जाती हैं मानो अब लोगों की स्वास्थ्य सम्बंधी तमाम समस्याएं इतिहास बन जाने वाली हैं।

आज हमारा विज्ञान मंत्रालय जो एक प्रमुख कार्य कर रहा है, वह है विज्ञान कांग्रेस का आयोजन। विज्ञान कांग्रेस देश के प्रमुख विज्ञान आयोजनों में से एक है। लेकिन जैसा कि जाने-माने वैज्ञानिक पी. बलराम कहते हैं, यह भी अब महज़ भाषणों तक सीमित एक आयोजन भर रह गया है। अगली विज्ञान कांग्रेस 100वीं कांग्रेस होगी, जिसमें अब महज़ चार माह का वक्त बाकी रह गया है। क्या हम उम्मीद कर सकते हैं कि यह 100वीं कांग्रेस तमाम ताम-झाम से अलग हटकर ऐसा विज़न पेश कर सकेगी, जो अगली सदी के लिए बुनियादी विज्ञान के विकास का भरोसा दिलाए? ***(स्रोत फीचर्स)***